यूक्रेनी लोक कथा

किंगबर्ड और भालू

इवान फ्रेंको द्वारा पुनर्कथित

चित्र: वी. मेल्निचेंको, हिंदी: अरविन्द गुप्ता
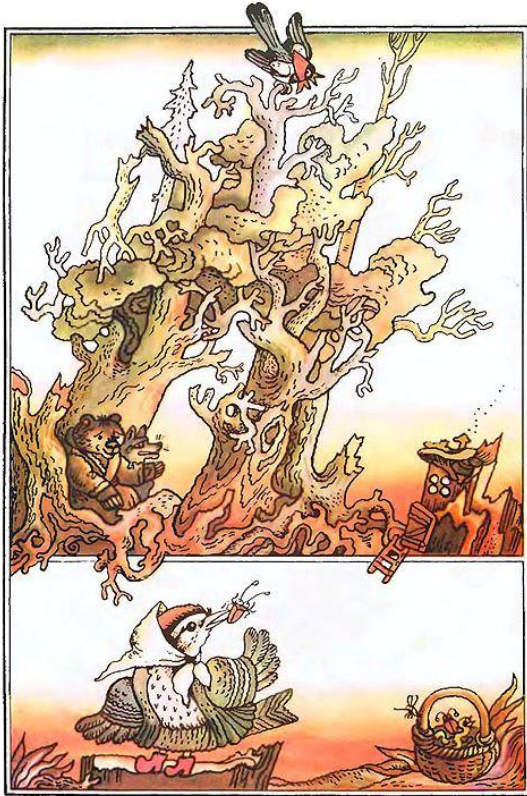
एक दिन भालू और भेड़िया जंगल में घूम रहे थे तभी उन्होंने झाड़ी में एक पक्षी को चहचहाते हुए सुना. पास आकर, उन्हें एक सीधी पूँछ वाला एक छोटा पक्षी दिखा, जो एक शाखा से दूसरी शाखा पर फुदक रहा था और चहचहा रहा था.

"भाई भेड़िये, वह कौन सा पक्षी है, जो इतना सुंदर गाता है?" भालू ने पूछा.

"चुप रहो, भालू, वो किंगबर्ड है," भेड़िया फुसफुसाया.

"एक किंगबर्ड?" चौंकते हुए भालू फुसफुसाया, "तो क्या हमें उसे प्रणाम नहीं करना चाहिए?"

"बेशक," भेड़िये ने कहा, और फिर वे दोनों प्रणाम करने के लिए पक्षी के सामने जमीन पर लेट गए. लेकिन पक्षी ने उनकी ओर देखा तक नहीं. वो एक शाखा से दूसरी शाखा पर कूदता रहा, चहचहाता रहा और लगातार अपनी सीधी पूँछ को सहलाता रहा.

"देखो, वह इतना छोटा है, फिर भी इतना घमंडी है कि उसने हमारी ओर देखा तक नहीं!" भालू बड़बड़ाया. "यह देखना दिलचस्प होगा कि उसका महल कैसा है."

"मुझे नहीं पता कि उसका महल अंदर से कैसा है," भेड़िये ने कहा. "लेकिन मुझे पता है कि उसका महल कहाँ है, फिर भी मुझमें कभी भी उसके महल को अंदर से देखने की हिम्मत नहीं हुई."

"यह तो बड़ी डरावनी बात है?"

"डरावनी हो या न हो, लेकिन मुझे अंदर से देखना का कभी मौका ही नहीं मिला."

“तो फिर अब चलकर देखें, फिर मैं भी महल देख लूंगा!” भालू ने कहा.
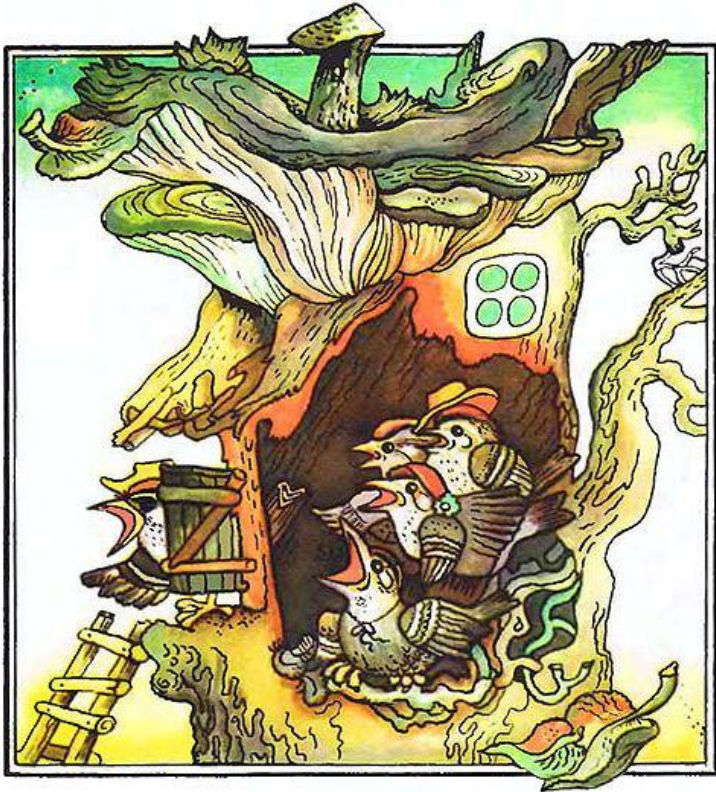
वे उस पेड़ के खोखले के पास गए जहाँ किंगबर्ड का घोंसला था, और जैसे ही भालू उसे देखने के लिए आगे झुका, भेड़िये ने उसकी पूंछ पकड़ ली और उसे पीछे खींचा.

"रुको, भालू रुको!" भेड़िया फुसफुसाया.

"क्यों क्या बात है?"

"देखो, किंगबर्ड उड़ गया है! और अंदर उसकी रानी है. इसलिए अब हमारे लिए उन्हें घूरना बड़ी अजीब बात होगी!"

भालू, भेड़िये के पीछे-पीछे झाड़ियों में चला गया जबकि किंगबर्ड और उसकी पत्नी अपने बच्चों को खाना खिलाने के लिए खोह में उड़ गए. उनके उड़ जाने के बाद, भालू ऊपर आया और उसने अंदर झांक कर देखा. वो खोखला किसी अन्य पेड़ के सड़े खोखले जैसा ही था; वहां कुछ पंख इधर-उधर फैले हुए थे और उन पर किंगबर्ड के पाँच बच्चे बैठे थे.

"तुम कहना चाहते हो कि यह किंगबर्ड का महल है?" भालू चिल्लाया. "देखो यह एक गड्ढे के अलावा और कुछ नहीं है! और क्या तुम इन्हें किंगबर्ड के बच्चे कहते हो? अरे! वे कितने बदसूरत और आवारा दिखते हैं!"

फिर जोर से थूकते हुए, भालू जाने के लिए मुड़ा, तभी घोंसले में किंगबर्ड के बच्चे चिल्लाने लगे:

"देखो, मिस्टर भालू! तो तुम हम पर थूका? तुम्हें इस अपमान का दर्दनाक जवाब देना होगा."

उनकी चीख-पुकार से भालू को एक ठंडी सिहरन महसूस हुई. उससे जितनी तेजी हो सका वो उस बदसूरत खोह से भागा और अपनी गुफा में जाकर बैठ गया. घोंसले में किंगबर्ड के बच्चे, एक बार जब शुरू हुए तो फिर वे तब तक चिल्लाते रहते जब तक कि उनके माता-पिता वापस नहीं आए.

"यहाँ क्या हो रहा है? बताओ क्या हुआ?" उनके माता-पिता ने पूछा, और फिर वे अपने बच्चों को मक्खी, कीड़ा, जो कुछ भोजन वे लाए थे वो देने लगे.

"हमें कोई मक्खियां नहीं चाहिए! हमें कोई कीड़े भी नहीं चाहिए!"

“अरे तुम्हें क्या हो गया?” माता-पिता ने पूछा.

"भालू यहाँ आया था और उसने हमें बदसूरत आवारा कहा, और उसने हमारे घोंसले में थूका भी," छोटे किंगबर्ड्स ने अपने माँ-बाप को बताया.

"अच्छा चुप रहो!" पिता किंगबर्ड चिल्लाया, और फिर वो बिना कुछ सोचे हुए वहां से उठा और भालू की गुफा की ओर उड़ गया.

"तुम बूढ़े खूसट!" किंगबर्ड ने भालू के सिर के ऊपर वाली शाखा पर बैठते हुए कहा. "तुमने यह क्या किया? तुमने मेरे बच्चों को आवारा कहा और साथ में मेरे घोंसले में थूकने की ज़ुर्रत की? तुम मुझे उसका जवाब दो! नहीं तो कल सुबह तुम्हें मुझसे खूनी लड़ाई लड़नी होगी!"

भालू क्या कर सकता था? यदि युद्ध होना होगा, तो युद्ध होकर रहेगा. भालू अपने समर्थन के लिए सभी जानवरों को बुलाने के लिए बाहर गया: भेड़िये, जंगली सूअर, लोमड़ी, बिज्जू, हिरण, खरगोश - वे सभी चार पैरों वाले जानवर, जो जंगल में दौड़ते थे. किंगबर्ड ने भी अपने सभी पंख वाले मित्रों को बुलाया. उसने जंगल के छोटे जीवों: मक्खियों, मधुमक्खियों ततैयों, मच्छरों को बुलाकर भी कहा कि वे कल एक महान युद्ध के लिए तैयार रहें.

"सुनो," किंगबर्ड ने कहा, "हमें दुश्मन के शिविर में पता लगाने के लिए किसी ख़ुफ़िया को भेजना चाहिए, ताकि हम जान सकें कि उनका जनरल कौन हो और युद्ध की उनकी रणनीति क्या है."

किंगबर्ड के सलाहकार ने मच्छर को भेजने का फैसला किया क्योंकि वो सबसे छोटा और सबसे चालाक था. जब वहां विचार-विमर्श चल रहा था, तभी मच्छर उड़कर भालू के खेमे में पहुंच गया.

"हम कैसे युद्ध शुरू करें?" भालू ने पूछा. "देखो लोमड़ी हममें से सबसे चतुर जीव है, इसलिए लोमड़ी ही हमारा जनरल होगा."

"बहुत अच्छा," लोमड़ी ने कहा. "देखो, अगर हमें केवल जानवरों से निपटना होता, तो सामान्य तौर पर भालू को जनरल बनाना बेहतर होता, लेकिन अब हमें सभी प्रकार के पंख वाले प्राणियों से निपटना है, और उसमें मैं अधिक मददगार साबित हो सकता हूं. यहां सबसे अधिक महत्वपूर्ण गुण होंगे - तेज़ नज़र और चालाक दिमाग. अब मेरी योजना सुनो. दुश्मन हवा में उड़ रहे होंगे. लेकिन हम उनसे ज्यादा परेशान नहीं होंगे. हम सीधे किंगबर्ड के घोंसले में जाएंगे और वहां पर उसके बच्चों का अपहरण कर लेंगे. एक बार जब बच्चे हमारे कब्ज़े में आ जाएंगे, तो फिर हम बूढ़े किंगबर्ड को युद्ध समाप्त करने और आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर देंगे. फिर जीत हमारी ही होगी."

"अच्छा बहुत अच्छा!" सारे जानवर चिल्लाये.

"इसका मतलब है," लोमड़ी ने जारी रखा, "कि हमें एक रेखा में आगे बढ़ना होगा, एक साथ रहना होगा, क्योंकि दुश्मन की सेना में चील, बाज़, और अन्य पक्षी हैं; अगर हम बिखरे-बिखरे आगे बढ़ेंगे तो वे हमारी आंखें नोच लेंगे. साथ मिलकर आगे बढ़ने से हम अधिक सुरक्षित रहेंगे."

"बिल्कुल सच," खरगोश चिल्लाया. चील के उल्लेख मात्र से उसके घुटने कांपने लगे थे.

"मैं आगे बढ़ूंगा और बाकी जानवर मेरे पीछे चलेंगे," लोमड़ी ने कहा, "आप सभी मेरी पूँछ को ध्यान से देखें - अपनी पूँछ से मैं आप सबको आदेश दूंगा. जब मैं पूँछ को हवा में सीधा उठाऊंगा, तो उसका मतलब होगा कि आप साहसपूर्वक आगे बढ़ सकते हैं. अगर मुझे आगे कोई खतरा दिखाई दिया, तो मैं पूँछ को तुरंत आधी झुका दूंगा. वो हमारे लिए धीरे और अधिक सावधानी से आगे बढ़ने का संकेत होगा. और अगर आगे कोई ज़बरदस्त खतरा दिखाई दिया तो मैं अपनी पूंछ को अपने पैरों के बीच में लाऊंगा. उस समय आपको अपनी पूरी ताकत से दौड़ना होगा."

"वाह वाह!" सभी जानवर चिल्लाए और उन्होंने लोमड़ी की चतुराई की बहुत प्रशंसा की. मच्छर, पूरी चतुर योजना को सुनकर, किंगबर्ड के पास वापस लौटा और उसने उसे विस्तार से जानकारी दी.

अगले दिन भोर में, जानवर अपना मार्च शुरू करने के लिए एकत्र हुए. धरती काँप उठी, झाड़ियाँ चरमराने लगीं, जंगल में गूँज रही दहाड़ें और चीखें एकदम भयावह थीं.
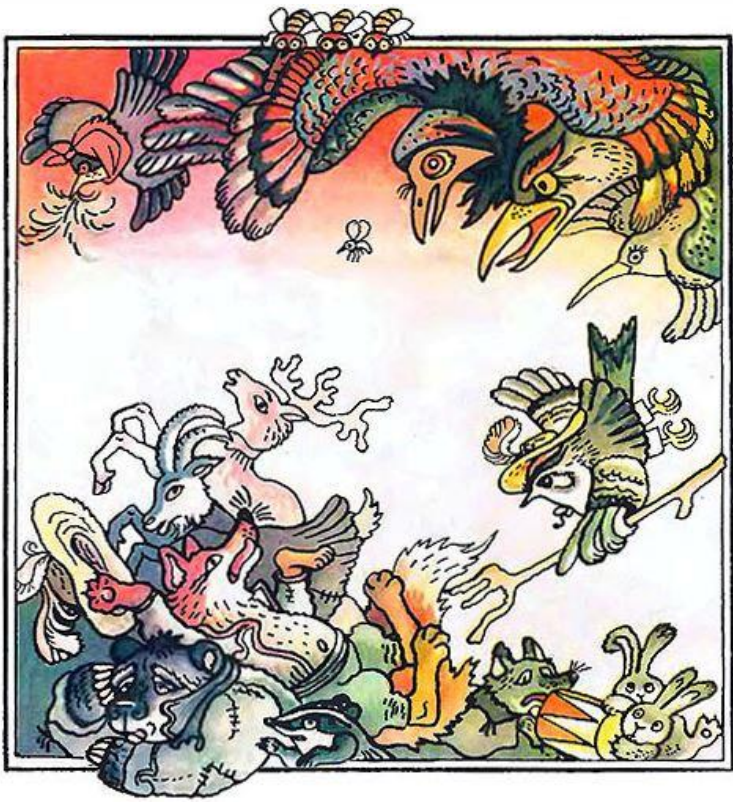
दूसरी ओर, पक्षी एकत्र हो रहे थे: हवा पंखों के फड़फड़ाने, पेड़ों के पत्तों के हिलने, चीखने-चिल्लाने, काँव-काँव के शोर से भरी हुई थी. जानवर एक ठोस पंक्ति में सीधे, किंगबर्ड के घोंसले की ओर आगे बढ़े. उधर एक घने बादल की तरह, पक्षी ऊपर आसमान में उड़े, लेकिन वे जानवरों को रोक नहीं सके. लेकिन बूढ़ा किंगबर्ड उससे ज्यादा चिंतित नहीं था. उसने लोमड़ी को, जानवरों की सेना की कमान के आगे गर्व से मार्च करते हुए देखा. लोमड़ी की पूँछ हवा में, मोमबत्ती की तरह सीधी खड़ी थी. फिर किंगबर्ड ने ततैया को बुलाया और उससे कहा:

"सुनो, दोस्त! तुम उस लोमड़ी को वहाँ देख रहे हो? वो दुश्मन का सेनापति है. जितनी तेजी से तुम से बने उतनी तेजी से उड़ो, लोमड़ी के पेट पर बैठो, और अपनी पूरी ताकत से उसे डंक मारो."

ततैया सीधे लोमड़ी के पेट तक उड़कर गई. लोमड़ी को लगा कि उसके पेट पर कुछ रेंग रहा था और वो अपनी पूँछ हिलाकर उसे भगाने की कोशिश करना चाहता था. लेकिन नहीं!! क्योंकि लोमड़ी की पूँछ युद्ध का मानक थी इसलिए लोमड़ी उस समय वैसा कुछ नहीं कर सकता था. लेकिन ततैया ने वहां जाकर अपना डंक एक बहुत ही कोमल जगह पर गाड़ दिया!

"ओह हाय!" लोमड़ी चिल्लाई और उसने अपनी पूँछ आधी नीचे कर ली.

"यह क्या है? यह क्या हो रहा है?" जानवरों ने एक-दूसरे से पूछा.

"मुझे लगता है... किसी तरह का... खतरा है," लोमड़ी दर्द से अपने दाँत भींचते हुए बुदबुदाया.

"एक खतरा, एक खतरा!" वो संदेश लाइन से नीचे प्रसारित हुआ. "सब जानवर सावधान रहें, कोई खतरा है."

लेकिन ततैया ने वहां फिर से अपनी पूरी ताकत लगाकर लोमड़ी को डंक मारा. लोमड़ी दर्द से चिल्लाई, हवा में उछली, उसने अपनी पूंछ अपने पैरों के बीच रखी और भागी. इस बार जानवरों ने उसके बारे में कोई सवाल नहीं पूछा कि क्या हो रहा था, बल्कि वे डर के मारे जिस दिशा में भी सुविधाजनक था, भागे और जल्दबाजी में एक-दूसरे के ऊपर गिर पड़े. फिर पक्षियों, मधुमक्खियों, मच्छरों और सींगों ने उनका पीछा किया, उनको ऊपर से पीटा - चोंच मारी, काटा आदि. वो एक भयानक युद्ध था! जानवर - जो जीवित बचे - वे तितर-बितर हो गए और गड्ढों और गुफाओं में जाकर छिप गए, जबकि किंगबर्ड अपने पक्षियों और कीड़ों के साथ विजयी रहा.
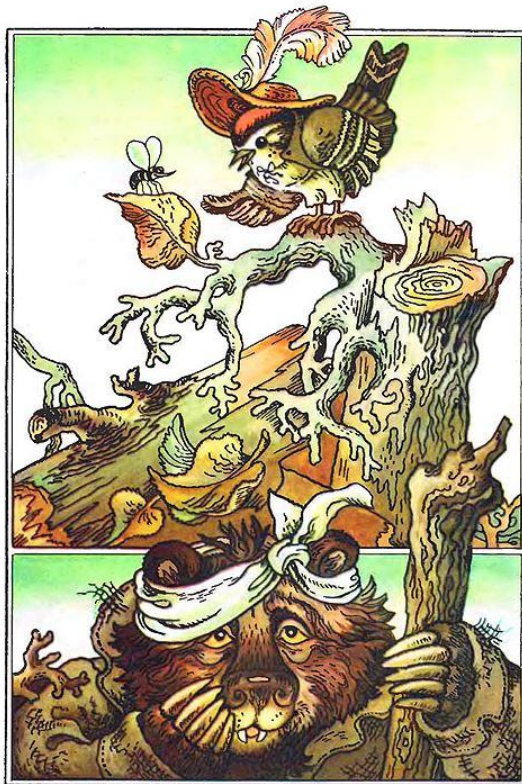
किंगबर्ड अपने बच्चों को जीत की खुशखबरी सुनाने के लिए अपने घोंसले में वापस गया.

"ठीक है बच्चों, अब तुम खा सकते हो, हमने जानवरों से लड़ाई जीत ली है."

"नहीं," किंगबर्ड बच्चों ने कहा, "हम तब तक खाना नहीं खाएँगे जब तक भालू यहाँ आकर हमसे माफ़ी नहीं मांगेगा."

क्या करता बेचारा? किंगबर्ड, भालू की गुफा के पास उड़कर गया. वो ऊपर एक शाखा पर बैठ गया और उसने कहा:

"ठीक है, बूढ़े खूसट, अब तुम आगे से किंगबर्ड से लड़ने की हिम्मत नहीं करोगे, क्यों?" लेकिन भालू, जो अपनी सेना के पीछे चल रहा था, जंगली सूअरों और हिरणों के खुरों और सींगों से बुरी तरह घायल हो गया था. भालू अब लेटकर कराह रहा था. "यहाँ से चले जाओ और मुझे शांति से लेटने दो," भालू गुर्राया. "मैं सभी से कहूँगा कि भविष्य में तुम्हें बिल्कुल परेशान नहीं करें."

"नहीं, मेरे दोस्त, यह पर्याप्त नहीं है," किंगबर्ड ने कहा. "तुम्हें मेरे खोखले पेड़ के पास जाना होगा और मेरे बच्चों से माफ़ी मांगनी होगी, क्योंकि अन्यथा तुम और भी बड़ी मुसीबत में पड़ जाओगे."

फिर भालू को जाकर किंगबर्ड के बच्चे से माफ़ी मांगनी पड़ी. तभी किंगबर्ड के बच्चे संतुष्ट हुए और उन्होंने फिर से खाना-पीना शुरू कर दिया.